

मित्र का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। वह हमारा सच्चा मार्गदर्शक, सहायक, सलाहकार और संरक्षक होता है। मित्र विश्वासपात्र होना चाहिए। उसके मन में मित्र के लिए सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। मित्र को चाहिए कि अपने मित्र को सदा कुमार्ति और कुसंगति से बचाए। उसके मन को इतना दृढ़ बनाए कि वह अपनी शक्ति से भी बढ़कर काम कर सके। मित्र के प्रति मन में कोई बुरा भाव या कपट न रहे।

कुसंगति एक धूल की बीमारी के समान होता है। थोड़ी-सी देर की बुरी संगति भी मनुष्य को बुराई के जाल में फँसा लेती है। एक बार बुरे लोगों के संपर्क में रह लेने पर बुराई को देखकर बुरी बातें सुनकर कोई चिढ़ नहीं पैदा होती। धीरे-धीरे मनुष्य बुरी बातों को सहन करने का आदत बन जाती है, उसका विवेक शक्तिहीन हो जाता है, यही दशा बने रहने पर एक दिन वह बुराई में डूब जाता है, उसे बुराई प्रिय लगने लगती है, वह बुराई का भक्त बन जाता है।

विश्वासपात्र मित्र जीवन की औषधि है। मित्रों में विश्वासपात्र मित्र तो बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है। वह प्रत्येक कठिनाई से हमें उबार सकता है। असे जीवन निश्चय ही सफल हो जाता है।

सच्ची मित्रता विश्वास पर टिकी होती है।
अच्छे मित्र अपने मित्र की हर स्थिति में
सहायता करते हैं। वे उसे बातियों से बचावे
हैं। अच्छे भाई पर चलने के लिए उत्साहित
हैं। सच्ची मित्रता में एक तुल्य वैध
जैसी चतुर्धाई और अनुपम को परखने की
शक्ति होती है। सच्ची मित्रता वही है जो
मान को समान धीरे और कोमलता से
पूर्ण हो।

मित्र बनाने समय व्यक्ति के बाहरी
रूप, रंग और व्यवहार पर ही ध्यान
नहीं देना चाहिए। उसके पिछले आचरण
और स्वभाव के बारे में भी पता लगाना
चाहिए। जिनका मनोबल हमसे अधिक न
हो या वे अपनी ही बात को अपर रखते
हों, ऐसे लोगों से मित्रा नहीं करनी चाहिए।
विवेक से काम लेकर मित्र बनाने से
मित्रता में बाधाएँ नहीं होती।

हमें अपने मित्रों से आशा रखनी
चाहिए कि वे हमको बुराईयों और भूलों से
बचावेंगे। हमारे मन में सत्य, पवित्रता
और नियम पालन की भावना को बल देंगे
हमको बुरे मार्ग पर चलते देखकर हमको
सावधान करेंगे। निराशा होने पर हमारे मन
को उत्साहित करेंगे। अच्छे ढंग से जीवन
बिताने में हमारी हर प्रकार से सहायता
करेंगे।

मित्रता निबंध आचार्य रामचंद्र शुक्ल का एक विचारालोक निबन्ध है। इस निबंध में मित्रता के अर्थ, इससे सावधानी, लाभ, आदर्श और आवश्यकता के बारे में है। लेखक कहते हैं कि मित्रता की धुन सभी को होती है, और सभी मित्र बनते हैं लेकिन बहुत कम योग्य सिद्ध होते हैं। लेखक ने सुझाव दिया है कि अच्छी मित्रता करनी चाहिए। सोच-समझकर मित्रता करनी चाहिए।

मित्र बनते समय सर्वप्रथम उसके आचरण तथा स्वभाव पर ध्यान देना चाहिए।